Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

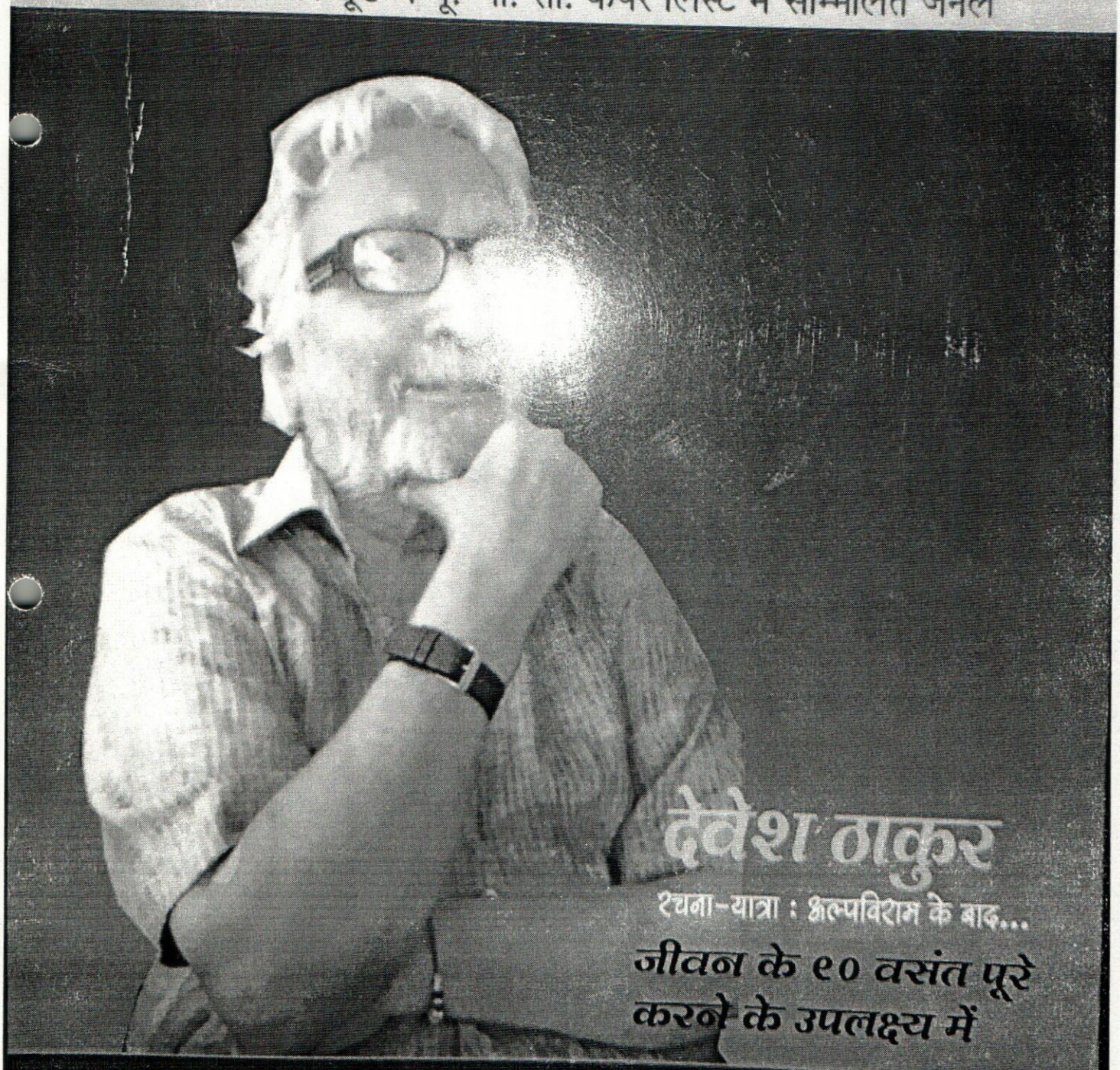

देवेश ठाकुर

रचना-यात्रा : अल्पविराम के बाद...

जीवन के ९० वसंत पूरे करने के उपलक्ष्य में

● वर्ष-16 ● अंक 36 ● जुलाई - सितंबर 2023 ● पूर्णांक 74 ● मूल्य 100 रुपए

● संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

36

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA
PIMPRI PUNE-17

अनुक्रमणिका

1. अपने तईं- अल्पविराम के बाद
2. डॉ. देवेश ठाकुर / जीवन वृत्त 07-08
3. पुरानी यादों के साथ-साथ कुछ नए लम्हे - डॉ. आभा नागराल 09-14
4. पिता के साथ बिताए कुछ पल - डॉ. आरती प्रसाद 15-18
5. जीवन-संध्या में भी प्रकाशवान - डॉ. रोहिणी शिवबालन 19-21
6. डॉ. देवेश ठाकुर : एक सतत ऊर्जस्वी व्यक्तित्व - विजय कुमार 22-25
7. सजग रचनाकार ही नहीं बेहतर इंसान भी - डॉ. आशा नैथानी दायमा 26-30
8. प्रकाश बिंदु से प्रकाश पुंज की सार्थक पहल - 'जंगल के जुगनू - डॉ. सचिन गपाट 31-33
9. 'जंगल के जुगनू' : स्त्री का एकाकी संघर्ष - डॉ. जाकिर हुसैन गुलगुन्दी 34-39
10. संघर्षरत स्त्री का समाजबोध : जंगल के जुगनू - डॉ. प्रीति सोनी 40-44
11. 'जंगल में जुगनू' में जीवन की सार्थकता - डॉ. उमेश कुमार 45-49
12. 'जंगल के जुगनू' और 'कातरबेला' उपन्यास में स्त्री मुक्ति का संघर्ष - सूर्जलेखा ब्रह्म 50-53
13. निम्नवर्गीय बालक की संघर्ष कथा : 'जीवा' - डॉ. इंदु बाली 54-58
14. जीवा' में व्यक्त समकालीन सामाजिक यथार्थ - डॉ. ममता पंत 59-67
15. अब भी बनाई जा सकती हैं जगहें रहने के लायक - वैशाली खेडकर 68-74
16. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण : विशेष सन्दर्भ 'कातर बेला' - डॉ. नीलाक्षी जोशी 75-80
17. कातर बेलाः स्त्री पुरुष-संबंधों का आख्यान - डॉ. दीपिका विजयवर्गीय 81-87
18. 'कातर बेला' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक घुटन - डॉ. शर्लिन 88-91
19. 'कातर बेला': आधुनिक नारी के एकाकीपन की व्यथा-कथा - शारदा कहार (शोधार्थी)/ डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट (शोध निर्देशक) 92-96
20. जीवन-संध्या में जिजीविषा और संकल्प की अनूठी कथा : संध्याछाया - डॉ. वसुधा सहस्रबुद्धे 97-100
21. देवता का गुनाहः दैहिकता की कथा - कला जोशी 101-105
22. नकाबियों को बेनकाब करता : देवता के गुनाह - डॉ. श्यामसुंदर पांडेय 106-110
23. स्वप्न दंश : फिल्मी दुनिया का कड़वा सच - डॉ. दिनेश पाठक 111-116
24. 'व्यक्तिगत' में व्यक्त संवेदनाओं का स्वर - डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट 117-121
25. मारिया : अंर्तद्वन्द से ग्रस्त युवती की कहानी - डॉ. बसुंधरा उपाध्याय 122-128
26. 'मारिया' उपन्यास की मूल संवेदना - डॉ. शरेशचन्द्र चुलकीमठ 129-139
140-145

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA
PIMPRI, PUNE-17

अब भी बनाई जा सकती हैं जगहें रहने के लायक

- डॉ वैशाली खेडकर

'वह जानता है / जानता है कहता है बार बार /
अकेले केवल दासता मिलती है / मुक्ति सबके साथ है'
-राजेश जोशी

राजेश जोशी की ये पंक्तियाँ मनुष्य का जीवन दर्शन अभिव्यक्त करती हैं। मनुष्य का इतिहास गुलामी की दासता का इतिहास रहा है। ताकतवर और सर्व शक्तिमान हमेशा अपने से छोटे और कमजोर का शोषण करता है। अकेले इससे जूझना मुश्किल है पर सामूहिकता शोषण- परंपरा का अंत करती है। शोषण जीवन की नियति नहीं है, पर संघर्ष जीवन का अविभाज्य अंग है। जीवन का अर्थ ही है संघर्ष। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक बिना थके, बिना रुके लड़ता रहता है। कभी जीतता है, कभी हारता है या अनजानी राहों पर भटकता रहता है। जिसके भीतर जीवन के प्रति आस्था और विश्वास है, वह सत्य और न्याय के रास्ते पर अडिग रहकर जीवनयापन करता है। मनुष्य जीवन का यही संघर्ष साहित्य का प्राणतत्व है। हिंदी साहित्य के उद्भव से लेकर वर्तमान समय के साहित्य तक में मनुष्य का यही संघर्षमय इतिहास दर्ज हुआ है। भारतेंदु, प्रेमचंद, निराला, जैनेंद्र, यशपाल, अश्क, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा आदि तमाम उपन्यासकारों की रचनाओं में निम्न, मध्य एवं उच्च वर्ग के यथार्थ जीवन का अंकन हुआ है। उसमें भी ग्रामीण एवं महानगरीय परिवेश पर काफी कुछ लिखा गया है पर बहुत कम उपन्यास हैं, जो महानगरीय परिवेश में जी रहे निम्न वर्ग पर लिखे गए हैं। महानगरीय परिवेश हमेशा अपनी चकाचौंध और आधुनिकता के लिए जाना जाता है। इस चकाचौंध में बेहद गरीबी और अभाव में जीने वाला आदमी कहीं खो जाता है। वह भी जिंदगी से दो हाथ करते हुए लगातार जूझता रहता है पर उसका संघर्ष उसी की तरह अनजान रह जाता है। वर्त्तमान समय के सशक्त रचनाकार देवेश ठाकुर ने 'जीवा' में इसी निम्न वर्गीय समाज का जीवन-संघर्ष को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है।

हिंदी साहित्य जगत में देवेश ठाकुर उपन्यासकार, कहानीकार, समीक्षक, संपादक आदि कई रूपों में परिचित हैं। उनका साहित्य मानव जीवन के संघर्ष का प्रामाणिक दस्तावेज है। स्वयं उनका जीवन भी काफी संघर्षपूर्ण रहा है। यही वजह है कि उनके भीतर का रचनाकार आम आदमी के खून-पसीने की मेहनत को भली-भाँति पहचानता है। वे उपरी सतह पर नहीं बल्कि आम लोगों से भी गहराई से जुड़ते हैं। उनके खुद के जीवन संघर्ष ने समाज को देखने का एक अलग नजरिया प्रदान किया है। वे कहते भी हैं, 'मैंने जीवन के सिद्धांत कमरे में बैठकर नहीं गढ़े, अपने अनुभवों के निष्कर्ष को जीते हुए उनको अर्जित किया है।'[1] सच्चा रचनाकार समाज की उपज होता है क्योंकि उसका निर्माण समाज के भीतर रहकर ही होता है। देवेश जी भी समाज और परिवेश की उपज हैं। कबीर की तरह ही 'तू कहता कागज की लेखी मैं कहता आँखिन की देखी' वाली बात उन पर चरितार्थ होती है। वे कही-सुनी बात पर नहीं, अपनी आँख और अनुभव जगत पर भरोसा करते हैं। आर्थिक अभाव ने बचपन से ही उन्हें संघर्ष के लिए मजबूर किया। शिक्षार्जन के लिए भी ट्यूशन लेना, अखबार डालना, होटल में जूठे बर्तन माँजना